पहली बूँद

डॉ. रजत मिश्रा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Rajat Misra 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-931-9

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: February 2026

पहली बूँद

'पहली बूंद' समर्पित है माता - पिता को जिनके आशीर्वाद से ही सबकुछ संभव हुआ

बेचैन हवाएं कर देंगी, रह-रह रजनी भरमाएगी,
विश्वास बनाए रखना तुम, एक सुबह सजीली आएगी।

उन्नति के सूत्र नए जिनको,
अपनाते मन घबराता है।
उत्साह कभी चट्टानों पर,
श्रम सीकर-सा गिर जाता है।

पर शूलों के ही बीच सदा,
फूलों का दल मुस्काता है।
मर्यादित बहती नदियों को भी,
कूल तोड़ना आता है।

प्रतिभा पर लाख लगें पहरे, यश का परचम फहराएगी।
विश्वास बनाए रखना तुम, एक सुबह सजीली आएगी।

उगते सूरज को नमन यहां,
जब चलता दिन भर तप-तप कर।
झंझावातों में रुके नहीं,
पहचान उसी की है पथ पर।

उठना-गिरना ही बार-बार,
चलने का ढंग सिखलाता है।
तपता है सोना आग बीच,
उसमें निखार तब आता है।

पतझड़ के दिन कितने होते, ठहरो बहार भी गाएगी।
विश्वास बनाए रखना तुम, एक सुबह सजीली आएगी।

पग-पग पर बिखरे हैं नाते,
पग-पग पर दूरी है मन से।

बचपन के कंधों पर चढ़कर
देखे यौवन कल के सपने।
सुधियों की लंबी राहों पर,
कितने झूठे, कितने अपने।
बंधन रेशम के धागों से, टूटन पर सारी है मन से।

टूटे पत्तों से करते जो,
फिर से जुड़ जाने की आशा।
कैसे समझाऊं मोह भरे,
मन को जीवन की परिभाषा।
संबंध मधुर अमृतफल से, कटुता पर सारी है मन से।

मेरी मानो बीता भूलो,
आओ अब मिलकर यह सोचें,
कैसे टूटे, कैसे छूटे, बिखरे कैसे
अब यह खोजें।
सूनापन भरने की आशा मुझको पर केवल है मन से।

मैंने देखा,
कल तक
टहनी से लगा
इठलाता फूल
आज झड़ गया
अपनी ही जड़ों में।
अनुनय के स्वर में
बोला जड़ से,
तुम मिट्टी में दबी ज़रुर हो,
उजाले की चमक-दमक से दूर हो
पर सब कुछ
तुम ही तो हो
बहुत इतराया मैं अपने रूप-सौंदर्य पर
पर यह दिया तो तुम्हारा ही है।
बड़ी देर से पहचाना तुम्हें
हो सके तो क्षमा कर देना।
एक बार फिर मुझे जन्म देना।
जड़ बोली,
क्या यह पहला क्षमादान है।
क्षमा में ही
गुरुता और सम्मान है।

सीमाओं में बहते सरिता के जल को है विश्राम कहाँ,
सूरज-सा जिनका यश दमके उनके जीवन में शाम कहाँ।

जीवन का चक्र चला करता, जाने वाला कब रुक पाता,
सेमल के फूल सरीखे दिन, डालों से बस थोड़ा नाता,
पर थोड़े से ही जीवन में जो कर जाते कुछ काम यहाँ,
सूरज-सा जिनका यश दमके उनके जीवन में शाम कहाँ।

बाधाओं से जो नहीं डरे, सुविधा के आगे नहीं झुके,
कितनी भी राह कठिन ठहरी, चलते-चलते जो नहीं रुके
उनको ही नतमस्तक होकर करता जग नित्य प्रणाम यहाँ,
सूरज-सा जिनका यश दमके उनके जीवन में शाम कहाँ।

श्रध्दा की पलकों पर बैठे, जन-जन ने वार दिए मन थे,
जड़ हो या हो चेतन प्राणी, सबको ही अपने लगते थे,
उनका गुणगान सदा करती वाणी को कहाँ विराम यहाँ,
सूरज-सा जिनका यश दमके उनके जीवन में शाम कहाँ।

जीवन की लंबी राहों पर
पग-पग पर उत्थान-पतन है,
फ़िर भी जीवन बड़ा मधुर है।

भोर सजीली, आँख खोलकर
सारे जग का रूप निहारे।
किरणों का दल लेकर सूरज
अंधकार के पंथ बुहारे।
लक्ष्य नवेले, तीर नुकीले
सुख में काँटों का बंधन है,
फ़िर भी जीवन बड़ा मधुर है।

टूटे सपनों की गाथा है,
पर आशा के द्वार खुले हैं।
नई चाल है, नई घात है,
सुख-दुःख दोनों संग पले हैं।
कभी आंधियाँ, कभी घटाएँ,
कभी बरसते मौन नयन हैं,
फ़िर भी जीवन बड़ा मधुर है।

बरगद से उतर
बांसों के झुरमुट से
लिपट गई शाम।
पगडंडियों पर गूँजे
मीठे देसी गीत
ढोर हाँकते चरवाहे
लौटे अपने घरों की ओर
सुरमई आकाश
भर गया
पंछियों की कतारों से
किसी की याद मन में संजोए
बेतहाशा भागे वे अपने घरौंदों की ओर
अलसाए खेत थककर हुए चूर
गहराने लगा अँधेरा,
घरों से उठते धुएँ से
जुगनुओं के दल के दल
लड़ने लगे अँधेरे से
गाँव ओढ़ बैठ गया काली कमरिया,
बाँस की खाट पर जिंदगी हुई तमाम
चुपके से ढल गई शाम।

मरुथल जैसा मन मेरा है,
रात काँपती, दिन तपता है।

आशाओं का एक महावन,
पल में जलकर राख हो गया।
मिट सारे संकेत गए, जो
जो जहाँ खड़ा था वहीँ रह गया।
टुकुर-टुकुर सब ओर निहारे
मृगशावक-सा मन मेरा है।

जिनको अपना समझा हमने,
आस जगाई हमने जिनमें।
भोर-शुक्र से डूब गए वो
संबंधों के तालाबों में।
फ़िर भी मंडराता दीपक पर
किसी शलभ-सा मन मेरा है।

इतना दोष हमारा निकला,
मौन रह गए सबकुछ सुनकर।
मत टूटे विश्वास किसी का,
यही भावना छुपी रही पर।
मानसरोवर उनका ठहरा,
मोती चुगता मन मेरा है।

चलो फ़िर ढूंढें नदियों के तट पर
खोई सभ्यताएँ
लहरों से पूछें
बहा ले गई, कहाँ वो
उजले मन, पवित्र आत्माएँ।

खंडहरों में खोजें, राजाओं के शिलालेख
पढ़ने की कोशिश करें
अनबाचे अभिलेख
दीवारों पर कान लगा
सुने सब सदाएँ
चलो फ़िर ढूंढें.......................

फागुन से जाने हम मौसम के हालचाल।
बावरी सी क्यूँ भटकती
फ़िरती बासंती बयार।
कहाँ खो गए अब पनघट के किस्से
कहाँ गए सावन के गीत और घटाएँ।
चलो फ़िर ढूंढें.......................................

गर्द संबंधों पर इतनी थी पुरानी खो गए हम,
याद आई तो विगत की कह कहानी सो गए हम।

साथ चलती लीक जैसे साथ थे पर मिल सके ना,
स्याह कोहरे से ढंके पथ कुछ हमारा कर सके ना,
धुँध की चादर छंटी फ़िर आसमानी हो गए हम
याद आई तो विगत की कह कहानी सो गए हम।

तुम सहज इतने तुम्हें हर दृष्टि से हमने बचाया,
लू, थपेड़ों में थके जब नेह का आँचल बिछाया,
धूप में फैली सुहानी घास धानी हो गए हम,
याद आई तो विगत की कह कहानी सो गए हम।

कुछ तो था जो साथ सुख के पल सकीं इतनी व्यथाएँ,
कुछ सहा तो स्वप्न जैसी सच हुईं कुछ कल्पनाएँ,
आचमन के योग्य गंगाजल के सानी हो गए हम,
याद आई तो विगत की कह कहानी सो गए हम।

नापकर विस्तार तन का
डस गया है सर्प मन को।

देखकर गतिमय पवन को,
शक्ति का संचय किया था।
मत मिटे अस्तित्व उसका,
दंश सह हर पल हँसा था।

उसी सुंदर सृष्टि ने अब
खो दिया है गंध तक को।

देखकर रोना किसी का
है नहीं पत्थर पिघलता,
और न व्यापार मन का
अंत तक चुपचाप चलता

लोभ अच्छे मूल्य का है,
बेचता विश्वास तक को।

मत मुझे आशा नई दो
व्यथा जितनी प्रचुर है वह
चित्र में साकार करके
फूंक दोगे प्राण क्या तुम।

मौन करके मुझे पहले
बाद में गूंगा बनाया।
बोल सकती हूँ कभी मैं
भाव यह मन में न आया।
किंतु अब मैं अर्थ लेकर
उन सभी को खोजती हूँ।
फ़िर मुझे दिग्भ्रमित करके
मार्गदर्शक मत बनो तुम।

सर्प बनकर डस रहीं हैं
अब निरंतर जग प्रथाएँ।
कर सकें संचय गरल का
अब नहीं बनती कथाएँ।
आस्था के दिव्य मंदिर
आँधियों ने तोड़ डाले।
साधना के यज्ञ के हित
नव ऋचाएँ मत रचो तुम।

नीड़ की जब कामना की
वृक्ष कितने थे दिखाए।
बोझ तिनकों का संभाला
नीड़ फ़िर भी बन न पाए।
तोड़ सुंदर स्वप्न मेरे
महल तुमने थे उठाए।
फ़िर वही विश्वास देकर
आज मुझको मत छलो तुम

जब कभी भी तुम
मुझे कहते हो
देवी, माँ या शक्तिस्वरूपा
मुझे लगता है भय
इन शब्दों से
देवी, माँ या शक्तिस्वरूपा
ये ठहरे शब्दजाल
जिसमें फँसती है नारी बार-बार
समय की बिसात पर
बिछाकर गोटियाँ
चलीं हैं कब से
तुमने अपने मन की चालें।
बार-बार मैं
जीवन के रथ का
एक पहिया बनाकर
बराबर के अस्तित्व बोध से
दी जाती हूँ भर
पर ये कैसा अधिकार
बंद कर दो तुम
मुझे महिमामंडित करना
मैं एक इंसान हूँ
रक्त, मज्जा, माँस से

बनी हुई
संवेदनाओं से गुंथी हुई
एक संवेदनशील स्वरुप
माटी की मात्र एक सुंदर मूरत नहीं।
तुम्हारा कोई खिलौना नहीं
अपना वजूद रखती
परिवेश से जूझती
छोड़ती रास्तों पर अपने निशान
मैं इंसान हूँ,एक इंसान।

बात बदलाव की हर बार
पर बयार नहीं
नए मुद्दों पर पलटवार
मगर धार नहीं।

अपना किस्सा तो बना
हर बहस का हिस्सा है।
हर एक शख्स बस
हालात पर ही गुस्सा है
बदले मौसम का है किसी को भी
अंदाज़ नहीं
नए मुद्दों पर पलटवार
मगर धार नहीं।

हमने पुरज़ोर उठाई जो
सही बात कभी
बस्ती बहरों की लगी
लौटी न आवाज़ कभी।
रहनुमा हर गली, घाट
मगर साथ नहीं
नए मुद्दों पर पलटवार
मगर धार नहीं।

कभी तो बदलेंगे मौसम के रंग
मौन खड़े ठूँठ हरियाएँगे
सुख-दुःख बांटेगी
शाख से लिपट शाख
हाथ उठाकर कोंपलें
पंछियों को बुलाएंगी
घनी शाखों पर बसेंगे घर
कभी तो बदलेंगे मौसम के रंग।

कभी तो छंटेगी जीवन से धुँध
रोशनी के गीत गुनगुनाएँगे
हार और जीत से परे हो
जिएंगे हम
नई किरणें ज़िंदगी का
नया पथ सजाएँगी
बज उठेगी फ़िर जलतरंग
कभी तो बदलेंगे मौसम के रंग।

आज मन कुछ व्यथित ऐसे,
नील नभ में साँझ जैसे।

समय ने करवट बदल ली,
हो गया इतिहास सबकुछ।
पर नहीं मैं भूल सकती,
चिह्न अंकित हैं हृदय पर।

अश्रु ऐसे बह रहे हैं,
धरा पर बरसात जैसे।

रेत पर चलते हुए
उर भी गया अब सूख मेरा।
बिंब में विश्वास न अब
भ्रम मेरा न हिरण जैसा।

मैं रही हूँ काँप ऐसे
आँधियों में दीप जैसे।

धूप का गुनगुना टुकड़ा
आज आँगन में नहीं है।
साथ था कल मेरे साया
आज तो वह भी नहीं है।

डगमगाते क़दम ऐसे,
भँवर में हो नाव जैसे।

बालू के टीले से बिखरे,
इन्द्रधनुष से दिखे मिटे,
सपने का कौन ठिकाना,
मत तुम आस लगाना।

मैंने उस वीरान शहर में,
फ़िर से एक हलचल देखी है।
करवट लेती रात कहीं पर
आँख खोलती सुबह दिखी है।
फ़िर से जाल गए फैलाए,
दानों का मौसम आया है
पलक झपकते ही उड़ जाना
मत तुम आस लगाना।

सहमी-सहमी सी गलियाँ हैं,
दरवाज़ों पर लगी सिटकनी,
कोने में चुपचाप खड़ी है,
मौन बनी, हैरान जिंदगी
इतना भी आसान कहाँ है
बार-बार मन का लग पाना
मीत मेरे उस द्वार न जाना
मत तुम आस लगाना।

बस करो अब फूँकना तुम बस्तियाँ
हाथ कुछ न आएगा मिट जाएँगी जब हस्तियाँ।

जब उठा झगड़ा सुनहरे पंख का,
वो तभी थे नील नभ को छोड़ आए,
चाँद तारों की चमक से दमकता,
वो जाल सारा तोड़ आए।
रेत पर बनते घरौंदे देख कितना खिलखिलायीं सीपियाँ।
बस करो अब फूँकना तुम बस्तियाँ ....

काटते कटते नहीं दिन, रास्ता रोके
पहाड़ों से खड़े हैं
टिमटिमाना छोड़ दो, आदेश सुन
दल तारकों के रात भर कितना लड़े हैं।
झुरमुटों से लिपट रोती हवा, बजती सीटियाँ।
बस करो अब फूँकना तुम बस्तियाँ ....

सौदागर कुछ ऐसे फैले, अम्बर तक नीलाम कर दिया।
कैसे-कैसे लोग दिखाए,
कितने बढ़-बढ़ दाम लगाए,
ईश्वर ने शायद मुझको भी
दो मुट्ठी आकाश दिया था,
मेरा क्षोभ यहाँ तक फैला, दो मुट्ठी भी दान कर दिया।
भीगे नयन कहाँ पर धोएं,
सूखे अधर कहाँ नम होएँ,
विस्तृत मरुस्थल में हरपल,
हिरणी को संतृप्ति चाहिए,
तपते मरुथल में अपनी ही छाया ने हैरान कर दिया।
कौन रचे अब गीत भोर का,
अर्चक कौन बने संध्या का,
लुप्त हो रहे धर्मभाव सब,
ऐसा नव विश्वास चाहिए,
साधारण भूतल को जिसने बसकर गोकुल धाम कर दिया।

देखना बदलेगा,
एक दिन सबकुछ बदलेगा।

रेशमी कालीन और चमकते पत्थरों के बीच
जब खो जाएगी,
चौखट पर राह देखती एक उम्मीद
बदलेगा,
एक दिन सबकुछ बदलेगा।

खनकते सिक्कों के बीच
तार-तार होती मर्यादा
जब अँधेरी गुफ़ाओं में,
तलाशेगी अपना वजूद,
बदलेगा,
एक दिन सबकुछ बदलेगा।

सुनहरे सिंहासन की बढ़ती लालसा,
और बिखरते आत्मसम्मान के दौर में,
जब बढ़ेगी चाह,
एक मुट्ठी आसमान की
बदलेगा,
एक दिन, सबकुछ बदलेगा।

एक संकल्प लेकर चले हैं,
मुश्किलें देख अब न रूकेंगे,
हम अंधेरों से लड़ते रहेंगे,
रास्ते सबके रोशन करेंगे।

कुछ पहल हमको करनी पड़ेगी,
साथ तुमको भी चलना पड़ेगा,
ये डगर इतनी आसां कहाँ है,
मिल के चलने से ही पथ कटेगा।

कितनी कोशिश से दीपक जला है,
आँधियों से न यूँ हम डरेंगे,
एक संकल्प लेकर चले हैं,
मुश्किलें देख अब न रूकेंगे।

देश अपना है अपनी ज़मीं है,
अपनी सबसे बड़ी जिम्मेदारी,
ठीकरा दूसरे सिर पर फोड़ें,
ये भी कैसी कहो दुनियादारी।

हाथ अपने संवारेंगे सबकुछ,
हौसला मन में लेकर बढ़ेंगे,
एक संकल्प लेकर चले हैं,
मुश्किलें देख अब न रुकेंगे।

सत्य के आधार पर ही आज मैं कुछ कह रही हूँ,
रेत के विस्तार में फैला हुआ यह भ्रम नहीं है।

आज भिक्षुक सिर्फ़ संचय
के लिए ही मांगता है।
मूर्तियों का मूल्य, मंदिर
का पुजारी आँकता है।

यह सभी कुछ देख करके आज अर्चक रो रहा है,
इस सहज जलधार से कुछ भी अधिक पावन नहीं है।

जो गए उनकी जगह को,
आज सिक्के भर रहे हैं,
नाश का निर्माण सबकुछ
जानकर भी कर रहे हैं।

कल उगेंगे जो उन्हें अब आज हम क्या दे सकेंगे,
बात यह लगती मुझे अभिशाप से कुछ कम नहीं है।

साँझ की दहलीज पर कुछ रीति के दीपक जलाकर,
सो गया आकाश अपनी सुरमई चादर बिछाकर।

भर उड़ानें साथ पंछी
कोटरों में लौट आए,
सघन वन के पात
निर्मल चाँदनी में थे नहाए।

कुछ नए किस्से सुनाकर शाख को पलना बनाकर
कर रहे विश्राम सारे द्रुमदलों की सेज पाकर।

रश्मियों को साथ लेकर
सूर्य का रथ लौट आया,
रूप खोते झुरमुटों पर
जुगनुओं का तेज़ छाया।

फैलते तम से उलझकर ज़िन्दगी के छंद रचकर,
द्वार अपने बंद करता भोर का विश्वास देकर।

एक अल्हड़ नदी की
अपनी अलग सबसे कहानी,
लहर पर संदेश लिखकर
रेत पर छोड़े निशानी
नित नया उत्साह लेकर रात दिन अनवरत बहकर,
पत्थरों से खेलती है जीत की बाज़ी लगाकर।

मैं युग का बोध कराता,
जड़ समझो या चेतन तुम।

तीव्र पवन के झोकों से,
मुंद गए पृष्ठ सब युग के,
मैं खोल पुनः फ़िर उनको
सबको यथार्थ बतलाता।

मेरी विराट वह शोभा,
हो गई लुप्त क्षण भर में,
कैसे जग को दिखलाऊं,
अपनी पहली सुंदरता।

इन टूटे अवशेषों में,
क्या स्वार्थ निहित अब जग का,
पहले था मैं अति सुंदर,
जग-जग का मुझसे नाता।

कभी सुख है, कभी दुःख है
एक से दिन कब ठहरते,
पलक झपकाते, हमारी
जिंदगी के रंग बदलते।

इन्द्रधनुषी कल्पनाएँ,
सुरमई-सी कामनाएँ,
एक पल सूरज चमकता,
घेर लेती फ़िर घटाएँ।

तोड़ने तम की परत को
रश्मियों के रथ सँवरते।
एक से दिन कब ठहरते।

एक पल उत्साह जीवन,
दूसरे पल है निराशा,
जय-पराजय खेल लगते
साँस से पर बंधी आशा
रेत पर जैसे घरौंदे,
लहर छू बनते-बिगड़ते
एक से दिन कब ठहरते।

अनवरत बहती नदी को
है जलधि तक पहुँच जाना

लक्ष्य छोटा या बड़ा हो,
ठानता मन उसे पाना

पर नियति का खेल अदभुत,
स्वप्न पलते और बिखरते
एक से दिन कब ठहरते।

मेरा पुरानापन मत देखो
मुझमें कभी नहीं आ पाएगी
तुम्हारे क्यूलियस सी सुंदरता और नवीनता
क्योंकि नव प्रयोग की इच्छा मेरे लिए
अब किसी की भी नहीं है।
मेरा जन्म आज से साठ वर्ष पहले
इस जगह पर हुआ था
और अंत
यह तो मैं नहीं जान सकता
मृत्यु का निर्धारण तो ईश्वर ने
मनुष्य के हाथ में दे दिया है
इसलिए तुम जब चाहो मुझे काट सकते हो
लेकिन तुम इतना जान लो
कि भले मैं तुम्हारे लॉन का आकर्षण नहीं हूँ
लेकिन मैंने तुम्हें बाढ़ से कई बार बचाया है
मानसून मेरी ही बदौलत आया है
लेकिन मैंने तुम्हें इसका अहसास नहीं कराया है
संभवतः इसीलिए मेरी उपयोगिता और
अनुपयोगिता का प्रश्न तुमने
इतनी सहजता से उठाया है।